भूमिका

हम एम.फिल. पूरा करने के लिए शोध-प्रबंध लिखना अनिवाय होता है। इसके बिना एम. फिल. पूरा नहीं हो सकता और यह हमारे अभ्यास का एक हिस्सा है। इसलिए मुझे कुछ विषय निधारित करने पड़ते ह ।

एम. फिल. के दौरान हमारे अभ्यास के दौरान मगन संग्रहालय, सेवाग्राम आश्रम, पवनार ले जाया गया। उसे देखने पर मेरे मन म गांधीजी की खादी के प्रति जिज्ञासा पैदा हई। मुझे यह लगा कि मेरा जो शोध-प्रबंध होगा, वह इन्हीं से सम्बन्धित हो। मेरे मन म इससे सम्बन्धित अनेक सवाल आये। जिसका कोई ताल-मेल नहीं हो रहा था। विषय को लेकर कुछ समझ म नहीं आ रहा था। मन म जो विषय आये वह एक कागज पर लिखकर सर के पास जमा कर दिया। उसम से एक विषय चुना गया। वह है वतमान म खादी की प्रासंगिकता एवं महिलाएँ । फिर इस विषय पर चचा हयी तथा मेरे मागदशक डॉ. डी. एन. प्रसाद सर ने मुझे थोडा बदलाव करने के लिए कहा और विषय का नाम "**वतमान संदभ म खादी की प्रासंगिकता एवं महिलाएँ**" शीषक बना।

इस प्रकार मेरे मागदशक ने समय-समय पर मुझे गाईड किया ओर इसके लिए उन्होने ने मेरी बहत ही मदद की।

विषय का चयन तो हआ। इसके बाद इसके अध्याय किस प्रकार हो और कितने अध्याय हो इस पर चचा हयी। इस विषय से संबन्धित जानकारी हासिल करने के लिए किताब, नेट, पत्रिकाओं से सहायता मिली। खादी से संबन्धित जानकारी पर गाईड से चचा हयी और अध्याय निधारित हए। इस प्र□□ □□□अध्याय निधारित हए। वह निम्नलिखीत है-

प्रथम अध्याय - खादी का उद्भव और विकास

प्रथम अध्याय म खादी का इतिहास तथा खादी का [illegible]

व्दितीय अध्याय - खादी और महिलाएँ

[illegible]

तृतीय अध्याय - खादी को प्रासंगिकता और वतमान संदभ

तृतीय अध्याय म वतमान म खादी को प्रासंगिकता और खादी अधिक [illegible]

चतुथ अध्याय - प्रासंगिकता को परिधि म खादी

चतुथ अध्याय म प्रासंगिकता को परिधि [illegible]

[illegible]

अध्याय निधारित होने पर उस अध्याय का विश्लेषण किस प्रकार होगा, [illegible] प्रश्न हयी। चचा से जो बाते सामने आयी। उससे मुझे अध्याय [illegible]

[illegible]

[illegible]

वतमान संदभ म खादी [illegible]

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान खादी कताई, [illegible]
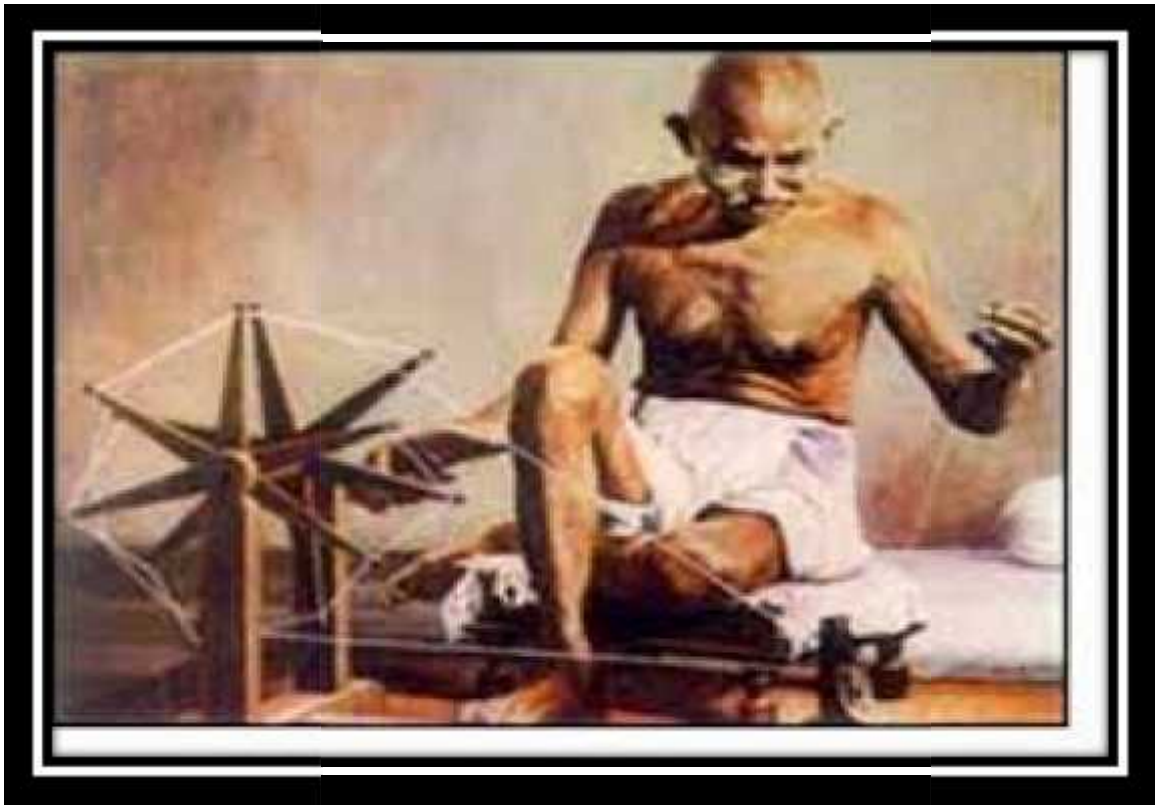
[illegible]